श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

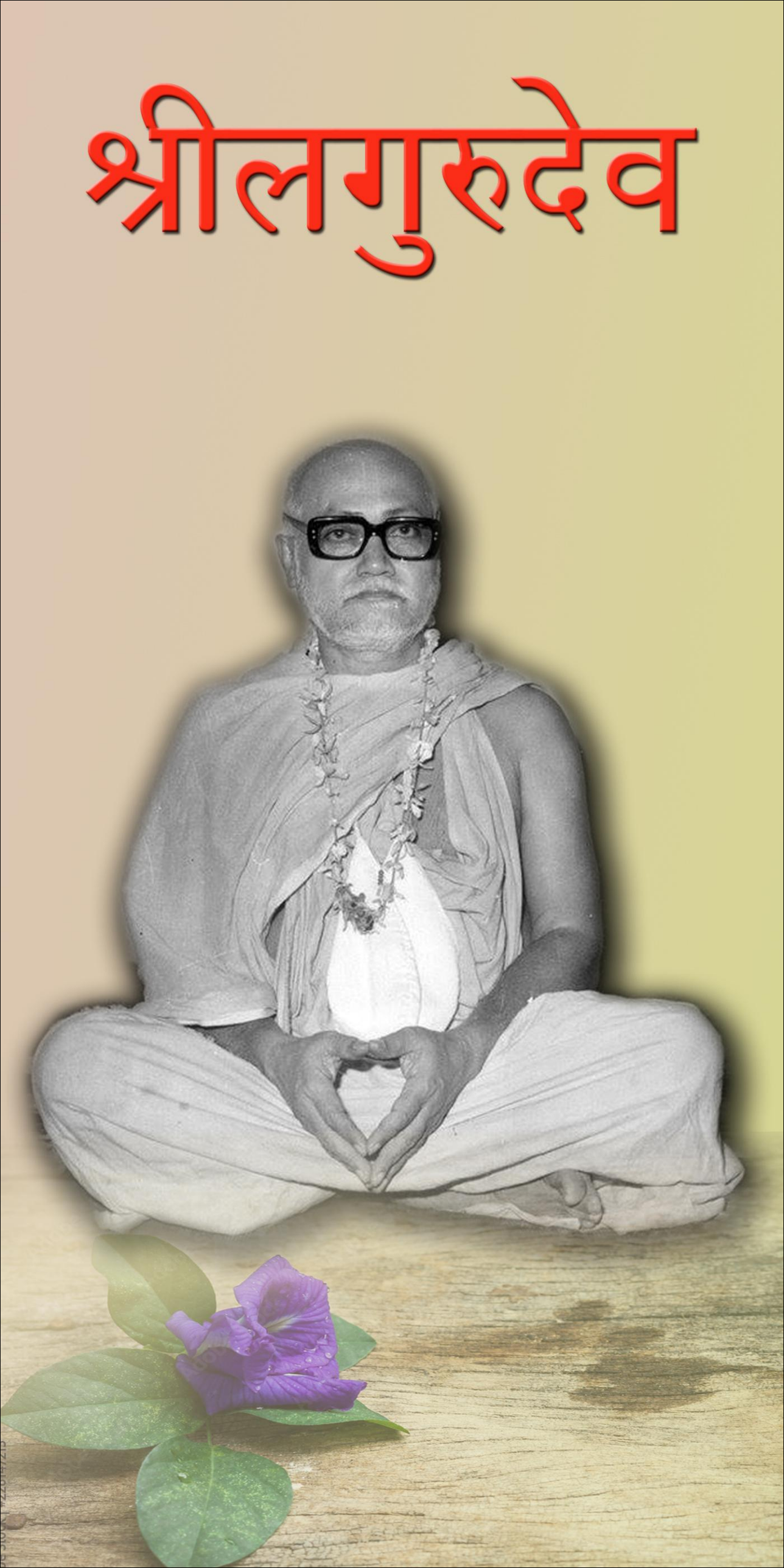

श्रीलगुरुदेव

श्रीसीमन्तद्वीप

इस स्थान को, वर्तमान में सिमुलिया कहते हैं। यह श्रवण - भक्ति की साधना का क्षेत्र है। इस स्थान पर श्रीपार्वती देवी जी ने श्रीकृष्ण जी के गौरावतार के दर्शन पाये थे तथा उन्होंने यहाँ पर श्रीगौरांग महाप्रभु जी के पादपद्मों में प्रणाम के समय श्रीगौरपदधूलि अपने सिर की मांग में धारण की थी। स्त्रियाँ अपने केशों के मध्य में जहाँ माँग भरती हैं, चूंकि उसे सीमन्त भी कहते हैं इसीलिये इसे

सीमन्तद्वीप कहते हैं। इस सम्बन्ध में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी अपन श्रीनवद्वीपधाम - माहात्म्य में लिखते हैं —

“सिमुलिया देखि' प्रभु जीव- प्रति कय।
एइ त' 'सीमन्तद्वीप' जानिह निश्चय ।।

गंगार दक्षिण तीरे नवद्वीप - प्रान्ते ।
सीमन्त नामेते द्वीप वले सब शान्ते ।।

काले एइ द्वीप गंगा ग्रासिवे सकल।
रहिबे केवल एकस्थान सुनिर्मल ।।

यथाय सिमुली नामे पार्वती पूजन ।
करिबे विषयी लोके करह श्रवण ।।

कोनकाले सत्ययुगे देव महेश्वर ।
श्रीगौरांग बलि' नृत्य करिल विस्तर ॥

पार्वती जिज्ञासे तवे देव महेश्वरे।
केवा से गौरांग, देव बलह आमारे ॥

तोमार अद्भुत नृत्य करि' दरशन ॥
शुनिया गौरांग - नाम गले मोर मन ||

एत ये शुनेछि मन्त्र तन्त्र एतकाल ।
से सब जानिनु मात्र जीवेर जंजाल ॥

अतएव वल प्रभु गौरांग - सन्धान ।
भजिया ताँहारे आमि पाइब पराण ॥

पार्वतीर कथा शुनि' देव पशुपति ।
श्रीगौरांग स्मरि' कहे पार्वतीर प्रति।।

आद्याशक्ति तुमि हओ श्रीराधार -
अंश।
तोमारे बलिव तत्त्वगण - अवतंस ।।

राधाभाव लये कृष्ण कलिते एबार ।
मायापुरे शचीगर्भे हवे अवतार ।।

कीर्तन - रंगेते माति' प्रभु गोरामणि।
वितरिबे प्रेमरत्न पात्र नाहि गणि' ।।

एइ प्रेमवन्याजले ये जीव ना भासे ।
धिक् तार भाग्ये देवि जीवन -
विलासे।।

प्रभुर प्रतिज्ञा स्मरि' प्रेमे याइ भासि ।
धैरय ना धरे मन, छाड़िलाम काशी ।।

मायापुर अन्तभागे जाह्नवीर तीरे ।
गौरांग भजिव आमि, रहिया कुटिरे ।।

धूर्जटिर वाक्य शुनि' पार्वती सुन्दरी ।
आइलेन सीमन्तद्वीपेते त्वरा करि' ।।

श्रीगौरांग रूप सदा करेन चिन्तन ।
गौर बलि' प्रेमे भासे स्थिर नहे मन ।।

कतदिने गौरचन्द्र कृपा वितरिया ।
पार्वतीरे देखा दिला, सगणे आसिया।।

सुतप्त कांचन वर्ण, दीर्घ कलेवर।
माथाय चांचर केश, सर्वांग सुन्दर ।।

त्रिकच्छ करिया वस्त्र तार परिधान ।
गले दोले फूल - माला अपूर्व -
विधान।।

प्रेमे गद्गद वाक्य कहे गौरराय ।
बैल गो पार्वती, केन आइले हेथाय ।।

जगतेर प्रभुपदे पड़िया पार्वती ।
जानाय आपन दुःख स्थिर नहे मति ।।

ओहे प्रभु जगन्नाथ! जगत - जीवन ।
सकलेरे दयामय मोरे बिड़म्बन ।।

तब बहिर्मुख जीवे बन्धन - कारण ।
नियुक्त करिले मोरे पतित पावन ।।

आमि थाकि सेइ काजे संसार
पातिया।
तोमार अनन्त प्रेमे वन्चित हइया ।।

लोके बले यथा कृष्ण, माया नाहि
तथा ।
आमि तबे बहिर्मुख हइनु सर्वथा ।।

केमने देखिब प्रभु तोमार विलास ।
तुमि ना करिले पथ हइनु निराश ।।

एत बलि' श्रीपार्वती गौर - पद - धूलि ।
सीमन्ते लइल सती करिया आकुलि।।

सेइ हइते श्रीसीमन्तद्वीप नाम हैल।
सिमुलिया बलि' अज्ञजनेते कहिल॥

(श्रीनवद्वीपधाम माहात्म्य, छटा अध्याय)

भावानुवाद — सिमुलिया ग्राम को देखकर, श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीजीव गोस्वामी जी को कहते हैं — यह निश्चित रूप से जानना कि यह 'सीमन्तद्वीप' है। गंगा जी के दक्षिण की ओर नवद्वीप के प्रान्त में, सीमन्त नाम से द्वीप है। भक्त लोग ऐसा कहते हैं कि काल के प्रभाव से गंगा जी इस द्वीप को ग्रास कर लेंगी और तब केवल एक सुनिर्मल स्थान ही यहाँ पर रह

जायेगा। यहाँ पर संसारी लोग, सिमुली नाम से पार्वती की पूजा करेंगे।

श्रीमन्, नित्यानन्द जी कहते हैं कि तुम विस्तृत भाव से इस द्वीप की कथा सुनो — घटना इस प्रकार से है कि किसी सत्ययुग में श्रीमहादेव जी श्रीगौरांग - श्रीगौरांग कहकर बहुत नृत्य कर रहे थे। श्रीमहादेव जी को श्रीगौरांग नाम में सुध-बुध खोकर नृत्य करता देख श्रीपार्वतीदेवी जिज्ञासा करती हैं, हे देव! श्रीगौरांगदेव कौन हैं? आपका अद्भुत नृत्य दर्शन करके एवं श्रीगौरांग का नाम सुनकर मेरा मन भगवद्-प्रेम में द्रवित हो रहा है। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा कि अब तक जो

मन्त्र, तन्त्र मैंने सुने हैं, वे सभी जीवों के लिए झंझट ही हैं, ये श्रीगौरांग नाम सबसे मधुर है। हे प्रभु! मुझे बताइये कि मैं श्रीगौरांगदेवजी को कैसे प्राप्त करूंगी व कैसे उनका भजन करके मैं प्राण धारण करूंगी?

श्रीपार्वती की कथा सुनकर श्रीपशुपतिनाथ, श्रीगौरांगदेव जी का स्मरण करके कहते हैं — देवी ! तुम आद्याशक्ति, श्रीराधा जी का अंश हो! तुम तत्त्वगणों में शिरोमणि हो। मैं तुम्हें श्रीगौरतत्व के विषय में कहता हूँ। इस श्रीराधाजी के भाव को लेकर, - बार कलियुग में श्रीकृष्ण भगवान श्रीमायापुर में, श्रीशचीमाता को

अवलम्बन करके अवतार लेंगे। श्रीगौरमणि प्रभु, कीर्तन रंग में मत्त होकर पात्र अपात्र का विचार न करके, प्रेम-धन वितरण करेंगे। इस प्रेमरूपी बाढ़ के जल में जो जीव नहीं बहेगा, उसके भाग्य और जीवन को धिक्कार है। पार्वती! मैं तो प्रभु की इस प्रतिज्ञा को स्मरण करके प्रेम में विभोर हो जाता हूँ। इसलिये मैं काशी छोड़कर श्रीमायापुर के एक कोने में गंगा के किनारे कुटिया बनाकर श्रीगौरांग या महाप्रभु जी का भजन करूँगा।

धूर्जटि के वाक्य सुनकर श्रीपार्वतीदेवी शीघ्र ही सीमन्तद्वीप में आईं। वहाँ वह श्रीगौरांग रूप का सदा

चिन्तन करतीं एवं श्रीगौर नाम का कीर्तन करते-करते प्रेम में विभोर हो जातीं। कुछ दिन बाद श्रीगौरचन्द्र जी ने कृपा करके अपने पार्षदों के साथ श्रीपार्वतीदेवी को दर्शन दिया — उस समय तपाये हुये सोने के समान उनके शरीर का प्रकाश था। बड़ा सुन्दर व लम्बा - चौड़ा शरीर तथा सिर पर घुंघराले केश थे । ब्रह्मचारी की तरह उन्होंने त्रिकच्छ धोती पहनी हुई थी। उनके गले में सुगन्धित फूलों की माला अपूर्व शोभा फैला रही थी। प्रेम में गद्गद् होकर श्रीगौरसुन्दर जी पार्वतीजी को कहने लगे — पार्वती! कहो, तुम यहाँ कैसे आई हो? जगत के प्रभु के चरण - कमलों में पड़कर

पार्वती ने अपने दुःख की बात कही। उन्होंने कहा, हे प्रभु जगन्नाथ ! जगत के जीवनस्वरूप ! सभी पर आपकी दया है किन्तु आपने मुझे अपनी भक्ति से वंचित किया हुआ है। हे पतित-पावन! तुम ने बहिर्मुख जीवों को संसार में फंसाये रखने के लिये मुझे नियुक्त किया है। मैं उस कार्य के लिये संसार का विस्तार करते हुए आप के सुदुर्लभ प्रेम से वंचित हूँ। लोग कहते हैं, जहाँ श्रीकृष्ण हैं, वहाँ माया नहीं है, इसलिये माया स्वरूपिणी मैं आपके प्रेम से सर्वथा बहिर्मुख सी हो गयी हूँ। हे प्रभु! आप ही बतायें कि आप के लीला - विलास को मैं कैसे देखूंगी? आप ही मुझे रास्ता बताओ अन्यथा

मैं निराश हो जाऊँगी। इतना कहकर श्रीपार्वती ने कातरतासहित श्रीगौर - पदधूलि अपनी मांग में धारण कर ली। चूँकि यहाँ पर पार्वतीजी अपने सीमन्त में अर्थात् माँग में भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभुजी के चरणों की धूलि को लगाया था इसलिए इस द्वीप का नाम श्रीसीमन्तद्वीप हुआ है। आजकल, इसे लोग सिमुलिया कहते हैं।

(क) **बेलपुकुर** — शुद्ध भाषा में इस स्थान का प्राचीन नाम बिल्वपुष्करिणी या बिल्वपक्ष था। जनसाधारण इसको अपभ्रंश भाषा में बेलपौरखरा कहते थे। इस स्थान पर कुछ तपस्वी ब्रह्माणों ने लगातार 15

दिन तक बिल्व के पत्तों से पंचमुखी शिव की आराधना करके, शिवजी की कृपा से श्रीकृष्णभक्ति प्राप्त की थी, इसलिये इस स्थान का नाम 'बिल्वपक्ष' हुआ। श्रीभक्तिरत्नाकर ग्रन्थ के बारहवें तरंग में इस स्थान का माहात्म्य कुछ इस प्रकार लिखा है —

श्रीनिवासे कहे, बेलपौवेरा ए ग्राम।
कहये प्राचीने बिल्वपक्ष पूर्व नाम॥

बिल्वपक्ष नाम ए स्थानेर यैछे हय।
ताहा किछु कहिये प्राचीन लोके कय॥

पन्चवक्त्र शिवमूर्ति छिलेन एखाने।
ता 'र ये महिमा ताहा के कहिते जाने॥

श्रीकृष्णविषये येवा ये कार्य प्रार्थय।
ताहा पूर्ण करे पन्चववक्त्र दयामय ।।

एक समयेते कत तपस्वी ब्राह्मण ।
मनोरथ - सिद्धि हेतु करे शिवार्चन ।।

एकपक्ष बिल्वदले पूजिते शिवेरे ।
हइलेन शिव महाप्रसन्न अन्तरे ।।

कृपा - दृष्टये चाहि पन्चववक्त्र महेश्वर।।
विप्रगणे कहे- 'लह निजाभीष्ट वर ।।

विप्रगण कहे - सर्वश्रेष्ठ कार्य याहा ।
अनुग्रह करि - 'मो सबारे देह ताहा' ।।

विप्रगणे कहे शिव - 'कहिला आश्चर्य।
कृष्ण - परिचर्या बिनु नाहि श्रेष्ठ कार्य।।

विप्रगण कहे - ‘परिचर्या श्रेष्ठ हय ।
किरूपे हइबे लभ्य कह कृपामय ।।

पन्चवक्त्र कहे- 'किछु चिन्ता ना करिबे ।
अनायासे कृष्ण - परिचर्या लभ्य

ह 'बे ।।

एइ कथोदिने एइ नदीया - नगरे ।
कृष्ण अवतीर्ण हइबेन विप्रघरे ।।

तोमराओ सेइ संगे प्रकट हइबा ।
ता र बाल्यावेशे महासुख जन्माइबा ।।

करिया ताँहार स्थाने विद्या अध्ययन।
जानिबा ताँहारे पूर्णब्रह्म - सनातन ।।

तारे प्रिय भक्त - सह सदा कुतूहले ।
ताँ र परिचर्यारित हइबा सकले ।।

शुनि पन्चवक्त्र महादेवेर वचन ।
भूमे पड़ि प्रणमिला सकल ब्राह्मण ।।

करिया अनेक स्तुति विदाय हइया ।
कृष्णपादपद्म चिन्ते निभृते रहिया ।।

ओहे श्रीनिवास, गौरकृष्णेर इच्छाय।
कथोदिने पन्चवक्त्र हैला गुप्तप्राय ।।

एकपक्ष बिल्वदले पूजिल ब्रह्मण।
एइ हेतु बिल्वपक्ष नाम विज्ञे केन ।।

भावानुवाद — शचीमाता व विष्णुप्रिया के सेवक ईशान ने श्रीनिवास को कहा कि यह बेलपोवेरा ग्राम है। प्राचीन लोग इसे बिल्वपक्ष कहते थे। इस स्थान का नाम बिल्वपक्ष कैसे हुआ? प्राचीन लोग इस के बारे में बताते हैं कि पहले यहाँ पंचमुखी - शिव की मूर्ति थी। वैसे भी शिवजी बड़े दयालु हैं, उनकी महिमा कौन कह सकता है। श्रीकृष्ण जी की सेवा के लिये यदि कोई भी शिवजी से प्रार्थना करते तो दयामय शिव जी उसे पूर्ण कर देते थे। एक समय कुछ तपस्वी ब्राह्मणों ने अपने मनोरथ की सिद्धि हेतु शिव जी का अर्चन किया था । एकपक्ष काल तक अर्थात् 15

दिन तक बिल्वपत्र द्वारा शिव जी की पूजा करने से शिव जी बहुत प्रसन्न हुए। महेश्वर जी प्रकट होकर विप्रगणों पर कृपा दृष्टि से देखते हुए कहने लगे — ब्राह्मणगणों! मैं आपसे बड़ा प्रसन्न हूँ। आप - - मुझसे अभीष्ट वर मांग लो।

विप्रगणों ने कहा — इस संसार का जो सर्वश्रेष्ठ कार्य है, अनुग्रह करके हम सब को यही वर दीजिये कि हम वह कार्य कर सकें।

शिव जी ने विप्रगणों को कहा — आप सभी ने बड़े आश्चर्य की बात कही है, सच बात यह है कि श्रीकृष्ण

की सेवा के बिना कोई भी श्रेष्ठ कार्य नहीं है।

विप्रगणों ने कहा — हम मानते हैं कि श्रीकृष्ण की परिचर्या ही सर्वश्रेष्ठ है। हे कृपामय ! आप हमें यह बतायें कि वह श्रीकृष्णसेवा हमें किस तरह से प्राप्त हो सकती है?

उत्तर में पंचमुखी शिव ने कहा — 'कुछ चिन्ता न करना, तुम्हें अनायास में ही श्रीकृष्ण - परिचर्या लाभ होगी क्योंकि कुछ दिनों बाद नदीया नगर में एक विप्र के घर में श्रीकृष्ण अवतीर्ण होंगे। तुम भी उनके साथ प्रकट होओगे एवं उनकी बाल्यलीला में

साथ रहकर उन्हें बहुत सुख दोगे। उनके पास विद्या - अध्ययन करने से तुम सब जान जाओगे कि वे पूर्णब्रह्म सनातन हैं। उनके प्रिय - भक्तों के साथ तुम सब सदा उनकी परिचर्या में लगे रहोगे।

पंचमुखी महादेव जी के वचन सुनकर सब ब्राह्मणों ने उन्हें प्रणाम किया तथा अनेक प्रकार से स्तुति करके वहाँ से विदा हुए एवं एकान्त में रहकर श्रीकृष्ण पादपद्मों का चिन्तन करने लगे। ओहे श्रीनिवास ! श्रीगौरकृष्ण की इच्छा से कुछ दिन बाद पंचमुखी शिव, गुप्त प्राय हो गये। चूँकि लगातार 15 दिनों तक

बिल्वदल से ब्राह्मणों ने इस स्थान पर पूजा की थी, इसलिये विद्वान लोग इस ग्राम को 'बिल्वपक्ष' नाम से कहते हैं।

(ख) **गंगानगर** — यहाँ निमाइ पण्डित के अध्यापक, श्रीगंगादास पण्डितजी का घर था।

उनके घर में बनी पाठशाला में ही श्रीनिमाइ पण्डित व्याकरण का अध्ययन करते थे। यह स्थान वर्तमान में लुप्त होने पर भी इस स्थान की महिमा के सम्बन्ध में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी 'श्रीनवद्वीपधाम

- माहात्म्य' ग्रन्थ के छटे अध्याय में लिखते हैं —

"प्रभु बले शुन जीव ए गंगानगर।
स्थापिलेन भगीरथ रघुवंशधर ॥

यबे गंगा भागीरथी आइल चलिया।
भगीरथ याय आगे शंख बाजाइया ॥

नवद्वीप - धामे आसि' गंगा हय स्थिर।
भगीरथ देखे गंगा ना हय बाहिर ॥

भयेते विह्वल ह 'ये राजा भगीरथ
गंगार निकटे आइल फिरि' कत पथ ॥

गंगानगरेते बसि' तप आरम्भिल।
तपे तुष्ट ह ये गंगा साक्षात् हइल ।।

भगीरथ बले माता तुमि नाहि गेले ।
पितृलोक उद्धार ना हबे कोन काले ।।

गंगा बले शुन बाछा भगीरथ वीर ।
किछुदिन तुमि हेथा ह'ये थाक स्थिर।।

माघ मासे आसियाछि नवद्वीप - धामे।
फाल्गुनेर शेषे याव तव पितृकामे ।।

याहार चरणजल आमि भगीरथ ।
तार निज- धामे मोर पूरे मनोरथ ।।

फाल्गुन – पूर्णिमा - तिथि प्रभु जन्मदिन।
सेइ दिन मम व्रत आछे समीचीन।।

सेइ व्रत उद्यापन करिया निश्चय ।

चलिब तोमार संगे ना करिह भय ।।
ए गंगानगरे राजा रघु- कुलपति ।

फाल्गुन- पूर्णिमा दिने करिल वसति ।।

येइ जन श्रीफाल्गुन- पूर्णिमा - दिवसे ।
गंगास्नान करि' गंगा - नगरेते वसे ।।

श्रीगौरांग - पूजा करे उपवास करि ।
पूर्व पुरुषेर सह सेइ याय तरि' ।।

सहस्र पुरुष पूर्वगण संगे करि' ।
श्रीगोलोक प्राप्त हय यथा तथा मरि' ॥

ओहे जीव, ए स्थानेर माहात्म्य अपार।
श्रीचैतन्य नृत्य यथा कैल कतबार ॥

गंगादास-गृह आर संजय - आलय ।
ऐ देख दृष्ट हय सदा सुखमय ॥"

श्रीजीव गोस्वामी जी को श्रीनित्यानन्द प्रभु कहते हैं — जीव, सुनो! इस गंगानगर को रघुवंशधर राजा भगीरथ ने स्थापित किया था। जब गंगाजी चली आ रही थीं तो राजा भगीरथ आगे-आगे शंख बजाते जा रहे थे। श्रीनवद्वीपधाम में आकर, गंगाजी

स्थिर हो गईं। राजा भगीरथ ने देखा कि गंगा और बाहर नहीं हो रही हैं, तो भय से विहल होकर राजा भगीरथ वापस आकर गंगा के निकट आये एवं गंगानगर में बैठकर उन्होंने तप आरम्भ कर दिया। तप से तुष्ट होकर गंगाजी साक्षात् प्रकट हुईं, तब राजा भगीरथ कहते — माता! आपके नहीं जाने से, पितृगणों का किसी काल में भी उद्धार नहीं होगा।

गंगाजी ने कहा " — वीर पुत्र भगीरथ ! सुनो, कुछ दिन तुम यहाँ स्थिर भाव से रहो। मैं श्रीनवद्वीपधाम में माघ के महीने में आई हूँ, फाल्गुन महीने के शेष में यहाँ से तुम्हारे पितरों

के उद्धार के लिये जाऊँगी। हे भगीरथ ! मैं जिनका चरणजल हूँ, उनके निजधाम में मेरे मनोरथ पूर्ण होंगे। प्रभु की जन्म तिथि फाल्गुनी पूर्णिमा है, उस दिन मेरा व्रत है । उस व्रत को पूरा करके, निश्चय ही तुम्हारे साथ चलूँगी। रघुकुलपति राजा ने फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन इस गंगानगर में वास किया था। जो व्यक्ति, फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान करके, गंगानगर में वास करके एवं उपवास करके श्रीगौरांग की पूजा करते हैं, वे अपने पूर्व - पुरुषों के साथ तर जाते हैं। जहाँ कहीं भी मृत्यु हो, वह, एक हज़ार पूर्व-पुरुषों के साथ श्रीगोलोक को प्राप्त होते हैं। ओहे जीव ! इस स्थान की

महिमा अपार है। यहाँ श्रीचैतन्य महाप्रभु जी ने बहुत बार नृत्य किया है। यहीं पर ही श्रीगंगादास जी का व श्रीसंजयजी का घर है।

(ग) **शरडांगा** — शूर - राजगण के राजत्वकाल में गौड़ की राजधानी 'शोरडांगा' थी, इसे ही वर्तमान में 'शरडांगा' नाम से कहा जाता है। इस शरडांगा का नाम 'शबरक्षेत्र' भी था। काला पाहाड़ के अत्याचार के कारण से श्रीक्षेत्र श्रीजगन्नाथदेवजी की श्रीमूर्ति लाकर, शबरक्षेत्र में स्थापित हुई थी। इस स्थान पर श्रीजगन्नाथदेवजी शबरगण पर कृपा करने के लिए विराजमान हैं, इसलिए

यह स्थान पुरुषोत्तम क्षेत्र से अभिन्न है। एक प्राचीन मन्दिर में श्रीजगन्नाथदेव, श्रीबलराम और श्रीसुभद्रा विराजमान हैं। पौराणिक उक्ति के अनुसार, पूर्वकाल में रक्तबाहु नाम के एक विष्णुद्वेषी द्वारा दुष्ट आचरण आरम्भ करने पर अर्चावतार श्रीजगन्नाथदेव जी ने परम समर्थ होते हुए भी असमर्थ की तरह लीला करते हुए भक्तगणों के प्रेमानन्दामृत सिन्धु को मंथन करने के लिए श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र से इस स्थान पर अपने सेवकों के सहित आगमन किया था।

'श्रीनवद्वीपधाम - माहात्म्य' के छटे अध्याय में वर्णित है —

श्रीजीवेरे बलेन वचन।
ओइ देख शरडांगा अपूर्व दर्शन॥

श्रीशरडांगा नाम अति मनोहर।
जगन्नाथ बैसे यथा लइया शबर॥

पूर्वे यबे रक्तबाहु दौरात्म्य करिल।
दयिता सहित प्रभु हेथाय आइल॥

श्रीपुरुषोत्तम सम ए धाम हय।
नित्य जगन्नाथस्थिति तथाय निश्चय॥

श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीजीव गोस्वामीजी को कहते हैं — शरडांगा का अपूर्व दर्शन देखो। श्रीशरडांगा नाम अति मनोहर है, जहाँ श्रीजगन्नाथदेव, शबरगणों को साथ लेकर रह रहे थे। पहले जब रक्तबाहु ने दुष्ट आचरण किया था, तब अपने प्रिय दयिता - सेवकों के साथ, प्रभु यहाँ आये थे। श्रीपुरुषोत्तम के समान यह धाम है, निश्चय यहाँ श्रीजगन्नाथदेव जी की नित्य स्थिति है।

(घ) **श्रीधर - अंगन** — श्रीमायापुर के शेष प्रान्त में एवं चाँदकाजी की समाधि के दक्षिण-पूर्व

में, श्रीधर - अंगन अवस्थित है। श्रीधर, श्रीमहाप्रभु के परमप्रिय निष्किचन भक्त थे। श्रीमहाप्रभुजी से खेल ही खेल में श्रीधर जी के साथ खूब प्रेम से झगड़ा करते थे। श्रीधरजी कुछ अप्रीति का भाव दिखाते हुए भी, अन्दर में खूब आनन्द पाते थे। श्रीमहाप्रभुजी ने अपने संकीर्तनदल के साथ, श्रीधरजी की कुटी में विश्राम किया था। इस कारण से, इस स्थान को विश्राम स्थल भी कहते हैं। श्रीधर, अत्यन्त दरिद्र थे, उनका एक केलों का बाग था। केला, मोचा, थोड़ इत्यादि बेचकर, अपनी जीविका निर्वाह करते थे। श्रीमहाप्रभु जी श्रीधर की दुकान से थोड़, केला, मोचा आदि

बिना मूल्य देकर अथवा कम मूल्य देकर ले लिया करते थे। श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीधरजी के गृह में विश्राम के समय बहुत से छेद वाले एक लोहे के बर्तन से पानी पिया था।

इस सम्बन्ध में 'श्रीनवद्वीप - धाम माहात्म्य' के छटे अध्याय में लिखा है —

"तबे तन्तुवायग्राम हइलेन पार ।
देखिलेन खोलाबेचा श्रीधर - आगार ।।

प्रभु बले एइ स्थाने श्रीगौरांग हरि।
कीर्तन विश्राम कैल भक्ते कृपा करि' ।।

एइ हेतु श्रीविश्रामस्थान एर नाम ।
हेथ श्रीधरेर घरे करह विश्राम ।।

श्रीधर शुनिल यबे, प्रभु आगमन ।
साष्टांग आसिया करे प्रभुर पूजन ।।

बले प्रभु बड़ दया ए दासेर प्रति ।
विश्राम करह हेथा आमार मिनति ।।

प्रभु बले तुमि हओ अति भाग्यवान् ।
तोमारे करिल कृपा गौर भगवान् ।।

अद्य मोरा एइ स्थाने करिब विश्राम।
शुनिया श्रीधर तवे हय आप्तकाम।।

बहु यत्ने सेवायोग्य 'सामग्री लइया।
रन्धन कराय भक्त ब्राह्मणेरे दिया॥

निताइ श्रीवास सेवा हैले समापन।
आनन्दे प्रसाद पाय श्रीजीव तखन॥

नित्यानन्दे खट्टोपरि कराय शयन।
सवंशे श्रीधर करे पादसंवाहन॥

* * *

श्रीधरेर कलाबाग देखिते सुन्दर।
इहार निकटे एक देख सरोवर॥

एइ सरोवरे कभु करि' जलखेला।
महाप्रभु हइलेन श्रीधरेर खोला॥

अद्यावधि मोचा — थोड़ लइया श्रीधर श्रीशचीमाता के देय उल्लास अन्तर।।

श्रीचैतन्यचरितामृत आ० 10/67-68 में लिखा है —

"खोला - बेचा श्रीधर प्रमुख प्रियदास।
याँहा- सने प्रभु करे नित्य परिहास ।।

प्रभु याँर नित्य लय थोड़- मोचा - फल।
याँर फुटा- लौहपात्रे प्रभु पिला जल।।"

भावानुवाद — तब श्रीनित्यानन्द प्रभु एवं श्रीजीव गोस्वामी जी ने जुलाहों के गाँव को

पार किया और केले बेचने वाले श्रीधर जी के घर को देखा। श्रीनित्यानन्द प्रभुजी ने कहा कि इस स्थान पर भक्तों पर कृपा करते हुए श्रीगौरांग महाप्रभु जी ने नृत्य - कीर्तन के बाद विश्राम किया था। इसलिये इसका नाम - विश्राम - स्थान हुआ। यहाँ श्रीधर के घर पर हम भी विश्राम करेंगे। श्रीधर जी ने जब श्रीनित्यानन्द प्रभु के आगमन का समाचार सुना तो उन्होंने उन्हें साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके श्रीमन् नित्यानन्द प्रभु का पूजन किया। श्रीधर ने कहा, हे प्रभु! आपने इस दास पर बड़ी दया की है। मेरी यही विनती है कि आप कृपया करके यहाँ विश्राम करें।

श्रीनित्यानन्द प्रभु ने कहा, तुम अति भाग्यवान हो, क्योंकि तुम पर श्रीगौर भगवान ने कृपा की थी। ठीक है, आज मैं यहाँ विश्राम करूँगा। श्रीनित्यानन्द जी के विश्राम की बात सुनकर श्रीधर जी बड़े सन्तुष्ट हुए। बहुत यत्न के साथ सेवायोग्य सामग्री उन्होंने एकत्रित की तथा भक्त ब्राह्मण द्वारा रसोई बनवाई। श्रीनिताई प्रभु एवं श्रीवास पंडित की प्रसाद सेवा समापन होने पर श्रीजीव प्रभु ने भी आनन्द से प्रसाद पाया। श्रीनित्यानन्द प्रभु को चारपाई पर शयन कराकर श्रीधरजी ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ श्रीनित्यानन्द प्रभु का पादसंवाहन किया था।

श्रीधर का केले का बाग देखने में बड़ा सुहावना है। इसके निकट एक तालाब को देखो। इस तालाब में जलक्रीड़ा करके श्रीमन्महाप्रभुजी ने श्रीधर का खोला (केले के पेड़ का आवरण) उठा लिया था। आज भी श्रीधर अपने बाग का मोचा (केले का फूल) तथा केले का थोड़ (केले के पेड़ का अन्दर का सफेद भाग, उसकी सब्जी बनायी जाती है) श्रीशचीमाता को देते हैं।

श्रीचैतन्यचरितामृत, आ० 10/67-68 में कहा है खोला (केले के पेड़ का आवरण) बेचने वाले श्रीधर श्रीमन् महाप्रभु का प्रियदास थे,

जिनके साथ प्रभु, नित्य परिहास करते थे। श्रीमन्महाप्रभु, उनसे रोज़ केला, थोड़ और मोचा लेते थे। यही नहीं, एक दिन तो महाप्रभु जी ने श्रीधर के लोहे के फूटे बरतन से जल पान किया था।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव